भगवान बुद्ध के अग्रश्रावक

सारिपुत्त

(महाप्रज्ञावानों में अग्र)

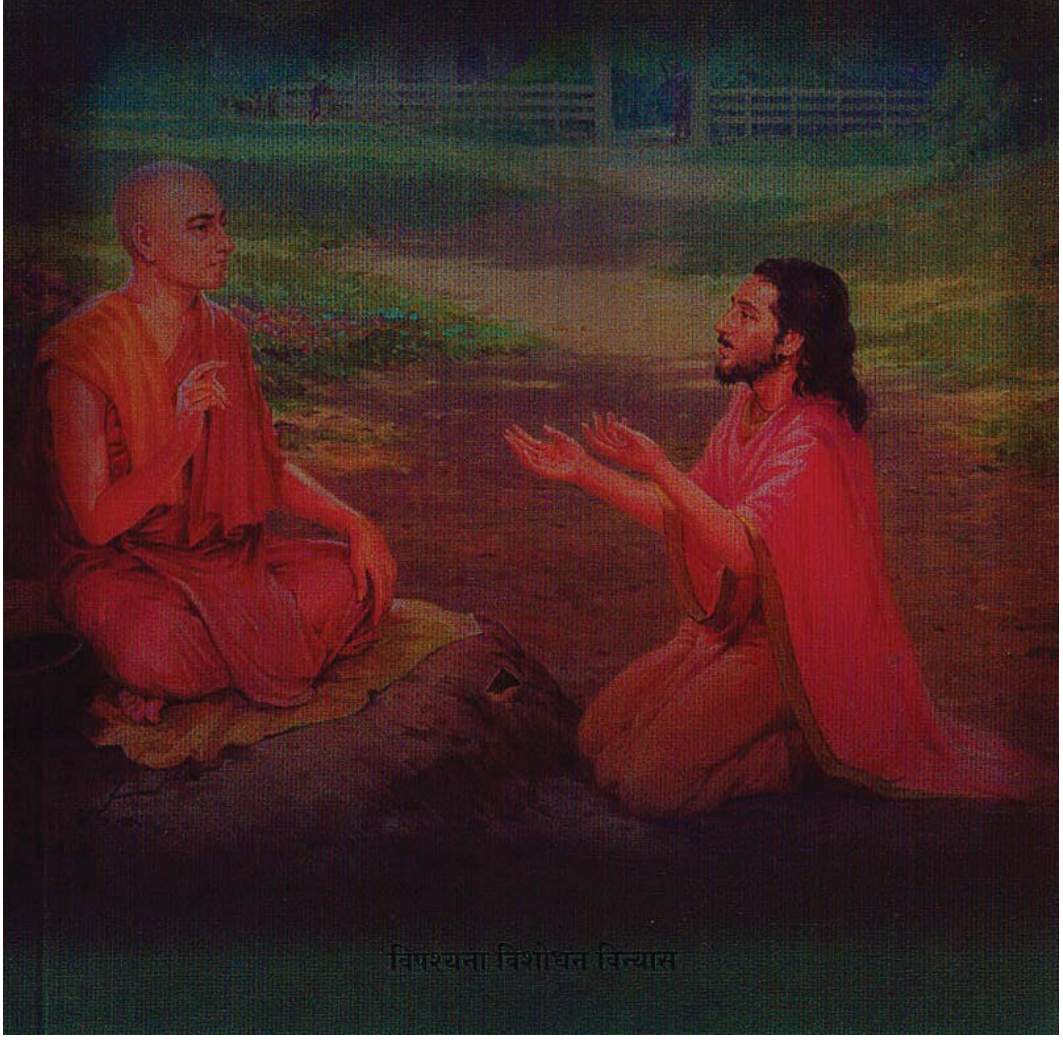

विपश्यना विशोधन विन्यास

भगवान बुद्ध के अग्रश्रावक

सारिपुत्त

(महाप्रज्ञावानों में अग्र)

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

भगवान बुद्ध की उद्‍घोषणा

****

"एतदग्गं, भिक्खवे, मम सावकानं भिक्खूनं महापञ्ञानं यदिदं सारिपुत्तो।"

****

"भिक्षुओ! मेरे महाप्रज्ञावान भिक्षु-श्रावकों में अग्र (श्रेष्ठतम) है सारिपुत्त।"

****

– अङ्गुत्तरनिकाय (१.१.१८९)

आयुष्मान सारिपुत्त

आयुष्मान सारिपुत्त

विषयानुक्रमणिका

प्रकाशकीय [ix]

अमृत की खोज.....१

जन्म तथा नामकरण १
धर्मचक्षु खुले १
प्रव्रज्या ५
आयुष्मान सारिपुत्त की अर्हत्व-प्राप्ति ६

निजी साधना के प्रसंग.....९

मोह-क्षय से भिक्षु स्थिर एवं शांत ९
आस्रवों से मुक्त करने वाली प्रतिपदा ९
सात बोध्यंगों में विहार. ११
नौ ध्यानों का साक्षात्कार १२
कल्याणमित्र का महत्त्व. १३
महापुरुष कौन होता है? १५
संक्षिप्त एवं विस्तृत उपदेश. १६

प्रज्ञावानों में अग्र.....१८

सारिपुत्त की पहचान १८
सारिपुत्त के प्रति भगवान का भाव १९
आयुष्मान वङ्गीस द्वारा आयुष्मान सारिपुत्त की स्तुति. २१
प्रज्ञा से परिनिर्वाण की प्राप्ति २२
बुद्ध के सर्वश्रेष्ठ पुत्र २३
सेनापति कौन है? २४
महाप्रज्ञावान सारिपुत्त २५
धर्मसेनापति सारिपुत्त २७

बुद्ध-सदृश उपदेश २९

शिष्य मेरे 'धर्म-दायाद' हों. ३०
कुशलधर्मों के ह्रास की पहचान ३१
सेवनीय-असेवनीय धर्म. ३१
उपादान-स्कंधों के मनन का फल. ३२
पंच उपादान-स्कंध और उनका निरोध ३३
सोतापत्ति के अंग और सोतापन्न ३४
दुःख प्रतीत्य-समुत्पन्न है. ३५
गृहस्थ जीवन में लौटने के कारण ३७
विरोधी भावों के शमन के उपाय. ३८
'सम्यकदृष्टि' की व्याख्या ४१

महाश्रावकों के साथ संवाद ४४

अनुरुद्ध की कठिनाई का निवारण ४४
बोध्यंगों की सिध्दि का ज्ञान ४५
सोतापन्न चार गुणों से युक्त ४६
पांच गुणों से युक्त आयुष्मान आनन्द ४७
अनुरुद्ध की प्रशंसा ४८
स्पर्शायतन-निरोध ही प्रपंच का अंत ४९
अव्याकृत ५०
अनातापी और अनोत्तापी ५१

धम्म-दान ५२

लकुण्डक को बहुविध धर्म समझाया. ५२
प्रमादी धनञ्जानि को सुधारा ५३
भोजन-दान फलीभूत हुआ ५४
अनाथ मछुआ-पुत्र को धर्मदान ५५
सहभिक्षु की मिथ्या धारणा का शोधन ५७
चित्त व्याकुल न होय! ६०

आयुष्मान सारिपुत्त और विनय ६४

बीमार सारिपुत्त की सेवा ६५
लहसुन खाने की अनुमति ६५

अतिरिक्त चीवर रखने का विधान ६६
दान-अनुमोदन का नियम ६७
अग्रपिंड के लिए योग्य भिक्षु ६८
धर्मानुसार व्यवहार ७०
घातक महत्त्वाकांक्षा का शिकार ७२

दुर्मन की दुर्गति.....७४

क्रोध से उत्पन्न दाह ७४
दंभी की जबान बंद ७५
कषाय वस्त्र धारण करने का अयोग्य पात्र ७७
संघ में फूट ७९
दुर्मुख कोकालिक ८०

आयुष्मान सारिपुत्त का भिक्षु परिवार.....८२

शिक्षाकामी राहुल ८२
आरण्यक खदिरवनिय रेवत ८४
प्रत्युत्पन्नमति राध ८६
सुभाषी उपसेन ८८
अर्हंत संकिच्च ८९
बनवासी तिस्स ९२
सीवलि ९४
पण्डित श्रामणेर ९५
महाचुन्द ९८
सारिपुत्त की बहनें ९८
कुमापुत्त नन्द ९८
महावच्छ ९९

गुणों का भंडार.....१००

अनुकरणीय आदर्श १००
ऐसे कहते भगवान १००
आचार्य पूजक १०१
अग्रश्रावकों की परस्पर-स्तुति १०२
भिक्षुओ! मेरा बेटा तृष्णारहित है १०३

सिर पर यक्ष का प्रहार १०४
निष्कासन पर भी समताभाव १०५
सारिपुत्त को क्रोध नहीं आता १०७
स्थविर द्वारा खाजा-त्याग १०८
धर्मपूर्वक आहार-ग्रहण १०९

विविध प्रसंग १११

बुद्ध अतुलनीय १११
पुण्ण का पुण्य जागा ११२
सालवन का आत्यंतिक वर्णन ११३
'ब्राह्मण' का 'साधना' से मेल ११५
ब्रह्मलोक पहुँचने का सही मार्ग ११५
सँयतेंद्रिय गृहस्थ द्वारा घोषणा ११७
एकांत प्रीति-सुख ११९
धर्मरत्न का साक्षात्कार १२०

परिनिर्वाण-लाभ १२२

परिनिर्वाण की अनुमति १२२
मातृ-सेवा १२४
भव-संसरण से मुक्ति १२४
दाह-संस्कार १२५
सारिपुत्त के प्रति आनन्द की कृतज्ञता १२५
बुद्ध को कोई शोक नहीं १२७
देहधातु १२८

अतीत कथा १२९

प्रकाशकीय

थेरगाथा की अट्ठकथा में भगवान बुद्ध के अस्सी 'महाश्रावकों' के नाम गिनाये गये हैं। उनमें भगवान बुद्ध के प्रज्ञावानों में अग्र महाश्रावकों में आयुष्मान सारिपुत्त का नाम सर्वोपरि है। इस पुस्तिका में इन महाश्रावक का जीवनवृत्तांत प्रस्तुत किया जा रहा है।

महाजनपद मगध की राजधानी राजगह के पास नाळकगाम में वङ्गन्त और रूपसारी नामक ब्राह्मण दंपति के घर उपतिस्स (सारिपुत्त) का जन्म हुआ। यह दंपति महाधनवान तथा संपत्तिशाली थे। वङ्गन्त ग्राम के मुखिया थे। उनके सात संतान हुई – चार पुत्र (उपतिस्स, उपसेन, महाचुन्द और रेवत) और तीन पुत्रियां (चाला, उपचाला और सिसूपचाला)। परंपरा के अनुसार सबसे ज्येष्ठ पुत्र का नाम ग्राम के नाम पर उपतिस्स पड़ा। कालांतर में उपतिस्स सारिपुत्त के नाम से प्रसिद्ध हुए। अपार भौतिक संपत्ति का वारिस होने पर भी सबसे बड़े बेटे उपतिस्स की रुचि धर्म-संपत्ति की ओर बढ़ती चली गयी।

वह अपने बचपन के मित्र कोलित (मोग्गल्लान) के साथ अपनी अपार वैभव-संपदा को त्याग सत्य की खोज में निकल पड़े। उपतिस्स और कोलित के परिवारों का पिछली सात पीढ़ियों से संबंध चला आ रहा था, इसलिए बाल्यकाल से ही इन दोनों का अति घनिष्ठ संबंध रहा। दोनों ही परिवार खूब धनाढ्य थे।

जन्म और मृत्यु के दुःखों का भव-संसरण चलता ही रहता है। इससे मुक्ति प्राप्त कैसे की जाय? उन्हें इसी की खोज थी। दोनों ने प्रव्रज्या ली। सर्वप्रथम उन्होंने परिव्राजक आचार्य संजय का शिष्यत्व ग्रहण किया परंतु वे इससे संतुष्ट नहीं हुए। तदनंतर जंबुद्वीप के अन्य विद्वानों से भी संपर्क किया परंतु संतोष प्राप्त नहीं हुआ।

इसके उपरांत वे एक दूसरे से अलग होकर आचार्यों की तलाश करने लगे और आपस में यह निर्णय किया कि जो कोई कुशल-आचार्य प्राप्त करने में पहले सफल हो वह इसकी जानकारी दूसरे को तुरंत देवे।

एक दिन राजगह की गलियों में घूमते समय उपतिस्स की भेंट भिक्षु अस्सजि से हुई। उपतिस्स आयुष्मान अस्सजि के चेहरे की कांति और शांति तथा संयमित चाल-ढाल से अत्यंत प्रभावित हुए। उपतिस्स को लगा कि अवश्य ही इस व्यक्ति